Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AFMA–105

M.A. (Final) Examination, 2023

HINDI

Paper - IV **(ख)**

(प्रेमचंद)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) ''सत्य जहाँ आनन्द का स्रोत बन जाता है वहीं वह साहित्य हो जाता है।'' इस कथन का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

(ii) साहित्य में आदर्श एवं यथार्थ संबंधी प्रेमचन्द के विचारों की समीक्षा कीजिए।

(iii) 'सेवा सदन' उपन्यास में किस समस्या को उठाया गया है ?

(iv) 'सेवा सदन' उपन्यास के प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए।

(v) 'रंगभूमि' उपन्यास का नायक कौन है ? उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(vi) स्वाधीनता आन्दोलन का गांधीवादी परिप्रेक्ष्य में चित्रण प्रेमचन्द की किस रचना में हुआ है ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

(vii) 'गुल्ली डण्डा' कहानी के कथ्य को स्पष्ट कीजिए।

(viii) 'मनोवृत्ति' कहानी के माध्यम से प्रेमचन्द ने स्त्री की गतिशीलता व स्वतन्त्रता पर पहरे की स्थिति पर सवाल उठाए हैं, स्पष्ट कीजिए।

(ix) 'कर्बला' नाटक के प्रकाशन वर्ष एवं प्रकाशित करने वाली साहित्यिक संस्था का नामोल्लेख कीजिए।

(x) 'कर्बला' दु:खान्त नाटक है, समीक्षा कीजिए।

खण्ड–ब

2. मनुष्य जाति के लिए मनुष्य ही सबसे विकट पहेली है। उसे खुद अपनी समझ नहीं आता किसी-न-किसी रूप में वह अपनी ही आलोचना किया करता है। अपने ही मनोरहस्य खोला करता है। मानव संस्कृति का विकास ही इसीलिए हुआ कि मनुष्य अपने को समझे। अध्यात्म और दर्शन की भांति साहित्य भी इसी सत्य की खोज में लगा हुआ है। अन्तर इतना ही है कि वह इस उद्योग में रस का मिश्रण करके उसे आनन्दप्रद बना देता है। इसलिए अध्यात्म और दर्शन के बल ज्ञानियों के लिए हैं, साहित्य मनुष्य मात्र के लिए।

3. जितने लोग हम जवान हैं, उनमें एक अपनापन, एक आत्मीयता, एक निकटता का भाव जगाती रहती है। मनुष्य में मेल-मिलाप के जितने साधन हैं उनमें सबसे मजबूत असर डालने वाला रिश्ता भाषा का है, राजनीतिक, व्यापारिक या धार्मिक नाते कमजोर पड़ सकते हैं, अक्सर टूट जाते हैं लेकिन भाषा का रिश्ता समय और दूसरी बिखेरने वाली शक्तियों की परवाह नहीं करता और एक तरह से अमर हो जाता है।

4. कौन है, जो अपने अतीत को किसी भयंकर जंतु के समान कटघरों में बन्द करके न रखना चाहता हो। धनियों को चोरी के भय से निद्रा नहीं आती, मानियों को उसी भांति मान की रक्षा करनी पड़ती है। वह जन्तु जो पहले कीट के समान अल्पाकार रहा होगा, दिनों के साथ दीर्घ और सबल होता जाता है। यहाँ तक हम उसकी याद से ही कांप उठते हैं; और अपने ही कारनामों की बात होती तो अधिकांश देवियाँ जुगनू को दुत्कारती; पर यहाँ तो मैके और ससुराल, ननिहाल, ददिहाल, फुफिहाल और मौसिहाल, चारों ओर की रक्षा करनी थी और जिस किले में इतने द्वार हों उसकी रक्षा कौन कर सकता है ?

5. हम छोटे-छोटे कामों के लिए तजुर्बेकार आदमी खोजते हैं, जिसके साथ हमें जीवन-यात्रा करनी है, उसमें तजुर्बे का होना ऐब समझते हैं। मैं न्याय का गला घोटने वालों में नहीं हूँ। विपत्ति से बढ़कर तजुर्बा सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला जिसने इस विद्यालय में डिग्री ले ली। उसके हाथों में हम निश्चिंत होकर जीवन की बागडोर दे सकते हैं। किसी रमणी का विधवा होना मेरी आँखों में दोष नहीं गुण है।

6. दीन उनके लिए है जो मुसीबतों के सबब से जिन्दगी बेजार है, जो मुहताज है, बेबस है, भूखों मरते हैं, जो गुलाम हैं, दुर्रे खाते हैं दीन बूढ़े मरदों के लिए, औरतों के लिए, दिवालिए सौदागरों के लिए है। इस खयाल से उसके आंसू पुँछते हैं, दिल को तसकीन होती है। बादशाहों के लिए दीन नहीं है। उसकी नजात रसूल और खुदा के निगाह-करम की मुहताज नहीं है।

7. आदर और सम्मान की भूख बड़े आदमियों को ही होती है; किन्तु दीन दशा वाले प्राणियों की इतनी भूख और भी अधिक होती है, क्योंकि उनके पास इसके प्राप्त करने का कोई साधन नहीं होता। वे इसके लिए चोरी, छल-कपट सब कुछ कर बैठते हैं। आदर में वह सन्तोष जो धन और भोग विलास में भी नहीं है। मेरे मन में नित्य यह चिन्ता रहती थी कि यह आदर कैसे मिले ?

8. इसकी चिन्ता न कीजिए। हानि, लाभ, जीवन, मरण, जस, अपजस विधा के हाथ है, हम तो खाली मैदान में खेलने के लिए बनाए गये हैं। सभी खिलाड़ी मन लगाकर खेलते हैं। सभी चाहते हैं कि हमारी जीत हो, लेकिन जीत एक ही की होती है, तो क्या इससे हारने वाले हिम्मत हार जाते हैं ? वे फिर खेलते हैं फिर हार जाते हैं तो फिर खेलते हैं। कभी-न-कभी उनकी जीत होती ही है जो आज आपको बुरा समझ रहे हैं, वे कल आपके सामने सर झुकाएंगे।

खण्ड–स

9. 'सेवा सदन' उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन की ज्वलन्त समस्याओं का उद्‌घाटन किया गया है। इस कथन के आधार पर सेवा सदन उपन्यास में उद्‌घाटित प्रमुख समस्याओं की समीक्षा कीजिए।

10. 'रंगभूमि' उपन्यास अंधे भिखारी सूरदास द्वारा अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोधात्मक संघर्ष की कथा है। इस कथन के आलोक में रंगभूमि उपन्यास की विकलांग विमर्शीय दृष्टिकोण से समीक्षा कीजिए।

11. ऐतिहासिक व धार्मिक परिप्रेक्ष्य में कर्बला नाटक की समीक्षा करते हुए नाटक की मूल संवेदना रेखांकित कीजिए।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

    (क) प्रेमचन्द के राष्ट्रभाषा संबंधी विचार।

    (ख) प्रेमचन्द की निबन्ध शैली की विशिष्टता।

    (ग) 'ठाकुर का कुआं' कहानी का सारांश

    (घ) 'अलग्योझा' कहानी की तात्विक समीक्षा।